

बालकपन में साथ पढ़े थे

बालकपन में साथ पढ़े थे या बात पुराणी के जाणै
धनवाले ना मीत किसी के प्रीत निभाणी के जाणै
बालकपन में साथ पढ़े थे.....

मैं जाणु था धन देवगा श्री कृष्ण सै यार मेरा
न्यु सोची थी दया करैगा साथी सै साहूकार मेरा
मानी कोन्या आवण का था कोन्या कोई विचार मेरा
पंडितानी मेरी देखती होगी कद आवे भरतार मेरा
खाली हाथ चल्या मैं उल्टा न्यु मिस्राणी के जाणै
धनवाले ना मीत किसीके प्रीत निभाणी के जाणै
बालकपन में साथ पढ़े थे.....

हीरे मोती भरे पड़े थे ताले ताली सोने की
देग टोकनी चाँदी की और लोटा थाली सोने की
कणि मणि कमरा महुँ जड़ रहीं लग रही जाली सोने की
आठों राणी पहर रहीं थीं कंगन बाली सोने की
हाय कंगाली के हो सै कर किशन की पटराणी के जाणै
धनवाले ना मीत किसीके प्रीत निभाणी के जाणै
बालकपन में साथ पढ़े थे.....

झूठा ढोंग दिखावें का करके गले लाग्या मेरै रो के नै
चंदन चौकी पै बिठलाया पैर मेरे धो धो के नै
सूखे चावल खाण लाग्या कितना राजी होके नै
पैर दाबता पाया जद मैं उठया सबेरे सो के नै
जिसनें देखें दुःख कोन्या वो विपत बेगाणी के जाणै
धनवाले ना मीत किसीके प्रीत निभाणी के जाणै
बालकपन में साथ पढ़े थे.....

अपणे घर जद आया सुदामा महल खड़े थे कंचन के
भरे खजाने हीरे मोती लाल जवाहर रतन धन के
देख यार का चमत्कार गुण गायें रहा यदुनंदन के
जीवन भर न भूलू मैं एहसान कभी श्री कृष्ण के
जैसी प्रीत निभायी श्याम ने कोई और निभाणी के जाणै
कोई और निभाणी के जाणै.....

<https://bhajanganga.com/bhajan/lyrics/id/20809/title/balakpan-me-saath-padhe-the>

अपने Android मोबाइल पर [BhajanGanga](#) App डाउनलोड करें और भजनों का आनंद ले |